SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अज्ञेय के कथा साहित्य में पूर्वोत्तर अंचल का यात्रा आख्यान

बृजेश कुमार पाण्डेय, पीएच–डी, शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग
शासकीय रामानुज प्रताप सिंहदेव कॉलेज, बैकुण्ठपुर, कोरिया, छत्तीसगढ़, भारत
ज्योति कमल, शोधार्थी, हिन्दी विभाग
संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
बृजेश कुमार पाण्डेय, पीएच–डी, शोध निर्देशक
ज्योति कमल, शोधार्थी
E-mail : bpramanuj80@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/05/2026
Revised on : 07/07/2026
Accepted on : 16/07/2026
Overall Similarity : 00% on 08/07/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Jul 8, 2026 (05:56 PM)
Matches: 0 / 2208 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

इस वर्तमान के भोगी संसार में एक आदिवासी ही है जिन्हें प्रकृति की चिंता है। ये वो लोग हैं जिन्होंने आदिकाल से प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया है। जलवायु के घोर संकट के काल में आदिवासी ही हैं जो अपनी सतत् जीवनशैली, अपने पूर्वजों के ज्ञान को आगे बढ़ाते हुए निरंतर इस पृथ्वी में जीवन को संभव बनाये रखा है और बदले में सदैव उपेक्षा और अजनबीपन का शिकार हुए हैं। इन सब के बीच सबसे ज्यादा उपेक्षा और अपनी स्वयं की पहचान ढूंढने वाला पूर्वोत्तर भारत जहाँ विभिन्न आदिवासी जनजातियाँ निवास करती हैं, जिन्हें बार–बार याद दिलाना पड़ता है कि देश मैं तुम्हारा ही हिस्सा हूँ, दुखद है। इस समय देश में पूर्वोत्तर राज्यों के निवासियों का भिन्न–भिन्न राज्यों में विभिन्न त्रासदियों से गुजरना भी दुर्भाग्यपूर्ण है। पूर्वोत्तर भारत को समझने और वहाँ की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थिति को जानने के लिए सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जी के निजी अनुभवों का दस्तावेज जरूर पढ़ा जाना चाहिए जहाँ उन्होंने अपने सैनिक जीवन में रहते हुए एक शोधार्थी के रूप में पूर्वोत्तर के प्रमुख राज्यों को करीब से देखा और जिया। उन्होंने अपनी यात्रावृत्तांत 'अरे यायावर रहेगा याद' तथा अपनी प्रमुख कहानियाँ 'हीली बोन की बतखें', 'मेजर चौधरी की वापसी', 'नगा पर्वत की एक घटना', 'जयदोल' एवं 'नीली हँसी' में पूर्वोत्तर भारत के जनजातियों की जीवन शैली, वहाँ की जातिगत परंपराएँ और विश्वास तथा वहाँ की प्रकृति और वहाँ के लोगों की विडंबनाओं का वास्तविक अनुभव साझा किया है साथ ही वहाँ की प्रचलित दंत कथाएँ, युद्धकालीन परिस्थिति तथा लोगों के संघर्ष को बड़ी कुशलता से चित्रित किया है।

मुख्य शब्द

पूर्वोत्तर, आदिवासी, पहाड़ी स्त्री, लोककथा.

अज्ञेय की कहानियाँ समाज के उन गहरे संवेदना से हमें जोड़ती हैं जिनकी ओर शायद हमारा ध्यान जाता ही नहीं है। ऐसी ही एक कहानी है ''हीली बोन की बतखें'' इस कहानी में पूर्वोत्तर भारत की वास्तविक स्थिति का चित्रण है। हीली एक पहाड़ी महिला है दुनियाँ में अकेली है। उसके जीवन का एकमात्र सहारा है उसकी बतखें। वे बतखें उसके लिए रोजी–रोटी का साधन नहीं है बल्कि उसके अकेलेपन की साथी भी है। पहाड़ी स्त्री के जीवन की वास्तविक स्थिति के साथ युद्धकालीन परिस्थिति में वहाँ की महिला के जीवन को यह कहानी बखूबी दर्शाती है जो हमारे समाज के वास्तविक चरित्र को उजागर करती है। ''युद्ध की अशान्ति के इन तीन–चार वर्षों में कितने ही अपरिचित चेहरे दिखे थे, अनोखे रूप; उल्लासित, उच्छ्वसित, लोलुप, गर्वित, याचक, पाप–संकुचित, दर्पस्फीत मुद्राएँ.... और वह जानती थी कि इन चेहरों और मुद्राओं के साथ उसके गाँव की कई स्त्रियों के सुख–दुःख, तृप्ति और अशान्ति, वासना और वेदना, आकांक्षा और सन्ताप उलझ गए थे, यहाँ तक कि वहाँ के वातावरण में एक पराया और दूषित तनाव आ गया था''[1]

कैप्टन दयाल जो फौजी इंजीनियर हैं हीली से वार्तालाप में कहते हैं–

''नीचेवालों ने हमेशा पहाड़वालों के साथ अन्याय ही किया है। समझ लीजिए कि पातालवासी शैतान देवताओं से बदला लेना चाहते हैं।''[2]

इस वाक्य में गहरा यथार्थ है पूर्वोत्तर के साथ सदैव अन्याय हुआ है। इनके साथ भेदभाव होता आया है। इस बात को लेखक ने बड़ी ही सच्चाई से कैप्टन दयाल से कहलवा दिया है। कहानी में हीली की बतखों का शिकार करने वाले लोमड़ी को कैप्टन दयाल गोली मार देते हैं। अंत में हीली जब उनके नर लोमड़ी को मरा हुआ देखती है और पास उसे निहारती मादा लोमड़ी और नवजात बच्चों को देखती है तो वापस लौट उन सारी बतखों को एक–एक कर मार देती है। हीली के भीतर के संवेदना और स्त्री की भावना का एक गहरा बोध यह कहानी अंत में छोड़ जाती है।

पूर्वोत्तर भारत को दर्शाती दूसरी प्रमुख कहानी है ''मेजर चौधरी की वापसी'' 'मेजर चौधरी की वापसी'– यह कहानी द्वितीय विश्व युद्ध के समय मणिपुर की वास्तविकता को दर्ज करने वाली एक महत्वपूर्ण कहानी है। मणिपुर की स्थानीय महिलाओं का काफी शोषण किया गया। यह भी युद्ध की परिस्थिति का एक भयंकर काला सच है परंतु उच्च अधिकारियों के द्वारा इस अत्यंत विभीषिका को नजरअंदाज किया गया। युद्ध काल हो या सामान्य जीवन हमेशा ही स्त्रियों को मनुष्य के तौर पर कभी स्वीकार ही नहीं किया गया। उन्हें तो मांस ही समझा गया। अज्ञेय ने उस दुर्दांत समय का बहुत ही जीवंत चित्रण किया है।

स्त्री शोषण को दर्शाती कहानी के दृश्य में मेजर चौधरी का कथन– ''उस दिन मैं अधिक देर करके जा रहा था। आधी रात होगी, गश्त पर जाते हुए उसी जगह के आस–पास मैंने एक चीख सुनी। गाड़ी रोककर मैंने बत्ती बुझा दी और टार्च लेकर पुलिया की ओर गया जिधर से आवाज आई थी मेरा अनुमान ठीक ही था, पुलिया के नीचे एक पहाड़ी औरत गुस्से से भरी खड़ी थी और कुछ दूर पर एक अस्त–व्यस्त गोरा फौजी, जिसकी टोपी और पेटी जमीन पर पड़ी थी और बुशर्ट हाथ में।''[3]

इस कहानी में लेखक ने युद्ध के दौर का जो वास्तविक चित्र खींचा है उससे हम समाज में घटित होने वाली अनियंत्रित समय का गहरा अनुभव कर सकते हैं। लेखक न केवल स्त्री शोषण को व्यक्त करते हैं बल्कि एक फौजी के जीवन के विडंबनाओं को भी व्यक्त किया है। जितना शोर युद्ध में बमबारी करती है उससे ज्यादा शोर तो चुपचाप मनुष्य के जीवन में घटित हो रहा होता है जिन्हें सुनने की क्षमता केवल अज्ञेय में हो सकती है–

''युद्ध में इन्सान का गुण–दोष सब चरम रूप लेकर प्रकट होता है। मुश्किल यही है कि गुण प्रकट होते हैं, तो मृत्यु के मुख में ले जाते हैं, दोष सुरक्षित लौटा लाते हैं। युद्ध के खिलाफ यह कम बड़ी दलील नहीं है– प्रत्येक युद्ध के बद इन्सान चारित्रिक दृष्टि से और गरीब होकर लौटता है।''[4]

अज्ञेय की पूर्वोत्तर पर आधारित तीसरी प्रमुख कहानी है ''नगा पर्वत की एक घटना''। कहानी नागालैण्ड की है जो पूर्व में नगादेश के नाम से जाना जाता था। यह कहानी नागालैण्ड की धरती पर द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वहाँ की परिस्थितियों का सजीव चित्रण करती है। डीमापुर में सैनिक छावनियाँ और इस कहानी में पूर्वोत्तर के भौगोलिक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। नागालैण्ड की जनजातियों का विशेष जिक्र इस कहानी में लेखक ने किया है। अज्ञेय ने प्रकृति के विराट रूप के आगे आदमी के अस्तित्व पर प्रश्न उठाया है। आदमी जहाँ जीवन पर्यन्त एक मनुष्य होने के सिवा सब कुछ बन जाता है अपने ही दुःखों और हिंसा की प्रवृत्ति में इस तुच्छ जीवन को गुजार देता है। वहीं प्रकृति भेदभाव किए बिना सदैव निश्छल बनी रहती है।

''सधा हुआ मानव–पशु अपनी सहज इच्छा या विवेक के ऊपर दूसरे की इच्छा या विवेक को मानकर उसके अनुसार चलता है। यानि मानव का जो अपने विवेक को अमल में लाने का कर्त्तव्य है; उसे वह–चलिए, ताक़ पर रख देता है कुछ काल के लिए। यह फ़ौजी अनुशासन की देन है पर अगर वह पशु अनुशासन के नाम पर अपने नैतिक बोध को, सद्–विवेक को ताक़ पर रख दे, और फिर सहज पशु–प्रवृत्ति की झोंक में अनुशासन को भी भुला दे... तब? तब तो वह पशु से बदतर है न?''[5]

असम की एक लोककथा के आधार पर 'जयदोल' कहानी की रचना की गई है। कहानी स्वतंत्रता संग्राम में पहाड़ी क्षेत्र की नारियों की भूमिका को व्यक्त करती है। इस कहानी की शैली किसी फिल्मी फ्लैशबैक के जैसी है। असम की एक गाथा है कि अहोम राजाओं के 600 वर्षों के इतिहास में चूलिकफा नाम का राजा सबसे निरंकुश था, वह निष्कटंक राज्य चाहता था। वहां की प्रथा थी कि कोई भी अंग विकृत व्यक्ति राजा नहीं बन सकता इसलिए वह सभी नव युवकों या राजा के योग्य व्यक्ति की अंग क्षति कर देता था। जब जयमती का पति कुमार गदापाणी को चूलिकफा के इस मंशा कि भनक लग जाती है। इसलिए वह पड़ोस के राज्य नगा पलायन कर जाता है, चूंकि गदापाणी उस समय राजा के स्थान पाने योग्य सर्वश्रेष्ठ उत्तराधिकारी था।

जब चूलिकफा को इसकी जानकारी मिलती है तो वह जयमती को अत्यंत कठोर यातना देता है ताकि कुमार की जानकारी उसे मिल जाये और वह उसके साथ भी वही करे जो अन्य लोगों के साथ हुआ, परंतु जयमती अपने प्राणों और यातनाओं की चिंता किए बिना प्रजा के भविष्य हेतु कुमार की जानकारी उसे अंत तक नहीं देती और अपने प्राण त्याग देती है। लोक कथाएं तो अतीत से वर्तमान को जोड़ती हैं यह कथा भी संदेश है कि स्त्रियों ने सदैव अपने लोगों की रक्षा के लिए अपनी आहुतियां दी हैं।

'नीली हंसी'– यह कथा असम द्वीपीय क्षेत्र की एक प्रेम कथा है। ब्रह्मपुत्र जहाँ जनजीवन का पालन करता है वहीं प्रतिवर्ष भीषण बाढ़ की त्रासदी भी लाता है। इस बाढ़ का वहां के जनजीवन और जीव घनत्व पर प्रभाव पड़ता है। यह लोककथा केवल प्रेम कथा ही नहीं है जीवन के संघर्ष की कथा भी है जो वहां के लोगों के जन जीवन को स्पष्ट चित्रित करती है। इस कथा के मूल पात्र देवकांत और नीलिमा है। कथा में अपनी शिक्षा अर्जन के लिए देवकांत अपनी प्रेमिका नीलिमा को छोड़ दूर डिब्रुगढ़ चला जाता है। एक दिन नीलिमा उसे पत्र में लिखती है कि वह अपने मोहन (मृगशावक) को ले जाये, क्योंकि वे लोग द्वीप छोड़कर जा रहे हैं। नीलिमा को यह डर था कि कहीं बाढ़ मोहन यानि उसके प्यारे मृगशावक को न निगल जाये।

कथा के अंत में मोहन लौटकर आता तो है पर नीलिमा को नहीं पाता और आखिरकार मोहन(मृगशावक) को बाढ़ से बचा लेता है।

''ध्यान देने वाली बात यह है कि अज्ञेय एक विकसित अथवा उन्नत बनाने का दावा करने की हैसियत से नहीं वरन् संवेदनशील सह अनुभूतिपूर्ण रचनाकार के रूप में उनके बीच मौजूद होते हैं; उनके विषय में जानने के इच्छुक होकर वे उन्हें, 'अन्य' के रूप में देखने–दिखाने की बजाय 'स्व' के अंग के रूप में देखने–दिखाने का प्रयास करते हैं। उनकी संवेदना का यह विस्तार हमसे अपेक्षा करता है कि हम भी उसमें सहभागी हों।''[6]

'अरे यायावर रहेगा याद?' अज्ञेय जी का एक महत्वपूर्ण यात्रा संस्मरण है। इसके बारे में उन्होंने कहा– ''भ्रमण या देशाटन केवल दृश्य–परिवर्तन या मनोरंजन न हो कर सांस्कृतिक दृष्टि के विकास में भी योग दे, यही उसकी वास्तविक सफलता होती है। अपने यात्रा–संस्मरणों में मेरा यह प्रयत्न रहा है कि उन यात्राओं के मेरी होने की बात उन्हें तात्कालिक अनुभव की प्रामाणिकता और टटकापन देने के लिए सामने आए; नहीं तो वे वृत्तांत एक समग्र दृष्टि को उभारने में ही योग दें जिससे भविष्यत् यात्री अपने–अपने अनुभव को समृद्ध बना सकें।''[7]

यह पूरा संस्मरण उनके फौजी जीवन का वृत्तांत है। उन्होंने अपने इस संस्मरण में पूर्वोत्तर के इतिहास, भूगोल और सामाजिक शोध की गहरी समझ की अभिव्यक्ति की है। यहाँ उनके असम प्रवास का एक उदाहरण द्रष्टव्य है– ''वर्तमान देवरिया सुटिया जाति के लोग अपने को क्षत्रिय बताते हैं। सम्भव है कि 'सुटिया' भी 'क्षत्रिय' से बना हो। जो हो, उनकी भाषा में हिंदी–संस्कृत शब्द प्रभूत हैं, और बुरंजी में लिखा है कि जब सुटिया बर्मा से असम आए तब केवल उन्हीं के पास लिपि थी, जिससे सिद्ध होता है कि यह जाति साक्षर और संस्कृत थी। अब भी देवरिया जाति उच्च जाति मानी जाती है और उनके घरों में हर कोई प्रवेश भी नहीं पा सकता।''[8]

''माझुली आकर मैंने देखा कि द्वीप के हिंसक पशुओं के साथ भी मानो मानव द्वीपवासियों का अलिखित समझौता है....''[9]

उक्त कथन में लेखक ने आदिवासी जीवन शैली को स्पष्ट करते हुए कहा है कि आदिवासी और प्रकृति के बीच जो संबंध है वह अन्यत्र देखी नहीं जा सकती। वे प्रकृति से मिलने वाले संसाधनों और वहाँ के जीव–जंतुओं के साथ साहचर्य भाव से रहते हैं।

इस पूरे संस्मरण में अज्ञेय ने प्राकृतिक विविधता, वहाँ की भौगोलिक सुंदरता, आदिवासी जीवन शैली, उनका इतिहास और वर्तमान, आधुनिक संसार में होने वाले परिवर्तनों का उनके जीवन में प्रभाव आदि का बड़ा रोचक अनुभव प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

आदिवासी जीवन पर युं तो लिखा बहुत कुछ जाता रहा है लेकिन उनसे संबंधित जानकारी भी अपरिपक्व या आधा–अधूरा ही प्रतीत होता है। मगर अज्ञेय की आदिवासी जीवन से संबंधित इन रचनाओं में हम पाते हैं कि उन्होंने आदिवासी जीवन शैली और उनकी कठिनाइयों को अपनी आँखों से देखा था। लंबे समय तक उन्होंने अपना जीवन वहीं के आबोहवा में बिताया था। एक संवेदनशील लेखक होने के नाते उन्होंने सदैव समाज के उपेक्षित वर्ग को प्रकाश में लाने का काम किया है। आदिवासी संस्कृति की अच्छी समझ विकसित करने के लिए उनके जीवन को समझने के लिए अज्ञेय को बार–बार जरूर पढ़ा जाना चाहिए जबकि बात पूर्वोत्तर की हो रही हो तब यह और भी जरूरी हो जाती है। पूर्वोत्तर के बारे में बार–बार बात की जानी चाहिए। पूर्वोत्तर वासियों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार और अज्ञानता को दूर करना बहुत जरूरी है। भारत के एकीकरण के दृष्टिकोण से भी यह अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. अज्ञेय (2022) *अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियाँ,* राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, पृ. 568।
2. अज्ञेय (2022) *अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियाँ,* राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, पृ. 569।
3. अज्ञेय (2022) *अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियाँ,* राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, पृ. 575।
4. अज्ञेय (2022) *अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियाँ,* राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, पृ. 579।
5. अज्ञेय (2022) *अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियाँ,* राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, पृ. 583।
6. पालीवाल (सं.), रीतारानी (2011) *अज्ञेय और पूर्वोत्तर भारत,* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 25।
7. अज्ञेय (1953) *अरे यायावर रहेगा याद?,* राजकमल पेपरबैक्स, दरियागंज, नई दिल्ली, पाँचवे संस्करण की भूमिका, पृ. 7।
8. अज्ञेय (1953) *अरे यायावर रहेगा याद?,* राजकमल पेपरबैक्स, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. 24।
9. अज्ञेय (1953) *अरे यायावर रहेगा याद?,* राजकमल पेपरबैक्स, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. 147।

****